चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	3.10.25	5	7-8

हकृवि ने ढैंचा की डीएच-1 किस्म के लिए नामी कंपनियों से किया समझौता

हिसार, 2 अक्तूबर (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित किए गए उन्नत किस्मों के बीज देश भर में अपना परचम लहरा रहे हैं। विश्वविद्यालय के उन्नत बीजों का देश में प्रचार-प्रसार करने के लिए विभिन्न सरकारी एवं गैर-सरकारी कंपनी के साथ समझौते किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय ने पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप के तहत तकनीकी व्यवसायीकरण को बढ़ावा देने के लिए ढैंचा की डीएच-1 किस्म का महाकालेश्वर एग्री टेक प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद, तेलंगाना तथा चरखा सीड्स कुरनूल, आंध्रप्रदेश के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि ढैंचा हरी खाद के लिए उगाया जाता है। यह एक दलहनी फसल है, जो मृदा की उर्वरता बढ़ाने में मदद करता है। ढैंचा की खेती मुख्यत: खरीफ के मौसम में की जाती है और इसे हरी खाद के रूप में इस्तेमाल किया जाता है जिससे मिट्टी में नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ती है और उर्वरता में सुधार होता है। कुलपति ने बताया कि वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को कृषि उपकरणों, जैविक खेती, सिंचाई तकनीक और फसल प्रबंधन हेतु नवीनतम जानकारी दी जा रही है। विश्वविद्यालय किसानों की पैदावार में बढ़ोतरी करने के साथ-साथ उनकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए भी सदैव प्रयासरत रहता है। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय की ओर से समझौता ज्ञापन पर विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने जबकि महाकालेश्वर एग्री टेक प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद की तरफ से अंबाती संजीवा रेड्डी तथा चरखा सीड्स कुरनूल की ओर से गणेश कुमार रेड्डी ने हस्ताक्षर किए हैं। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. पवन कुमार, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार, बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अध्यक्ष डॉ. वीरेन्द्र मोर, आईपीआर सेल के प्रभारी डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. राजेश आर्य व डॉ. जितेन्द्र भाटिया उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के साथ कंपनी के अधिकारी व विश्वविद्यालय के अधिकारी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	3-10-25	4	5-7

बीजों के तकनीकी व्यवसायीकरण को बढ़ावा देने के लिए निर्णय

एचएयू का ढैंचा की डीएच-1 किस्म के बीजों के लिए दो कंपनियों से समझौता

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) ने ढैंचा की उन्नत किस्म 'डीएच-1' के बीजों के तकनीकी व्यवसायीकरण को बढ़ावा देने के लिए दो प्रतिष्ठित कंपनियों-महाकालेश्वर एग्री टेक प्राइवेट लिमिटेड (हैदराबाद, तेलंगाना) और चरखा सीड्स (कुरनूल, आंध्र प्रदेश) के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। यह समझौता विश्वविद्यालय की पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप नीति के तहत किया है।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि ढैंचा एक दलहनी फसल है, जो मुख्यतः खरीफ मौसम में हरी खाद के रूप में उगाई जाती है। इसकी खेती मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने, नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ाने, जल धारण क्षमता सुधारने और जैविक सामग्री में वृद्धि के लिए की जाती है। ढैंचा की जड़ों में पाए जाने वाले राइजोबियम जीवाणु वायुमंडलीय नाइट्रोजन को भूमि में स्थिर करने का कार्य करते हैं। यह समझौता किसानों के लिए लाभकारी सिद्ध होगा और उन्हें अतिरिक्त रोजगार के अवसर प्रदान करेगा। विवि द्वारा विकसित उन्नत बीजों और कृषि तकनीकों को निजी क्षेत्र के सहयोग से देशभर में पहुंचाने के प्रयास किए जा रहे हैं। समझौते पर विश्वविद्यालय की ओर से डॉ. एसके पाहुजा और कंपनियों की ओर से अंबाती संजीवा रेड्डी व गणेश कुमार रेड्डी ने हस्ताक्षर किए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	3-10-25	2	5-8

दावा

एचएयू के कुलपति प्रो. कांबोज बोले-किसानों को मिलेगी उन्नत किस्म, खेतों की उर्वरता बढ़ाने में होगा लाभ

ढैंचा की डीएच-1 किस्म के लिए दो कंपनियों से समझौता

संवाद न्यूज एजेंसी

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू), हिसार द्वारा विकसित ढैंचा की डीएच-1 किस्म को राष्ट्रीय स्तर पर प्रचारित करने के लिए विश्वविद्यालय ने दो प्रमुख कंपनियों से पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप (पीपीपी) के तहत समझौता किया है।

ये कंपनियां हैं महाकालेश्वर एग्री टेक प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद (तेलंगाना) और चरखा सीड्स, कुरनूल (आंध्रप्रदेश)। इस समझौते का उद्देश्य विश्वविद्यालय द्वारा विकसित उन्नत बीज किस्मों का तकनीकी व्यवसायीकरण करना और किसानों तक नवीनतम तकनीक व उत्पाद पहुंचाना है।

कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बताया कि ढैंचा एक दलहनी फसल है जिसे हरी खाद के रूप में खरीफ मौसम में उगाया जाता है।

कुलपति प्रो. बीआर कांबोज के साथ कंपनी और विश्वविद्यालय के अधिकारी। स्रोत : संस्था

इसकी खेती से मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है क्योंकि इसकी जड़ों में पाए जाने वाले राइजोबियम जीवाणु वायुमंडलीय नाइट्रोजन को भूमि में स्थिर करते हैं।उन्होंने कहा कि ढैंचा की खेती से भूमि की संरचना में सुधार होता है, जलधारण क्षमता बढ़ती है, सूक्ष्म पोषक तत्वों की आपूर्ति सुनिश्चित होती है और खरपतवार नियंत्रण में मदद मिलती है।

विश्वविद्यालय द्वारा किसानों तक शोध आधारित बीज, जैविक खेती, फसल प्रबंधन और सिंचाई तकनीकों से संबंधित नवीन जानकारी लगातार पहुंचाई जा रही है। इस प्रकार के समझौते किसानों की आय में वृद्धि के साथ-साथ ग्रामीण युवाओं को रोजगार के अवसर भी प्रदान करेंगे।

हैदराबाद व कुरनूल की कंपनियां

कुलपति की उपस्थिति में विश्वविद्यालय की ओर से समझौता ज्ञापन पर विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने जबकि महाकालेश्वर एग्री टेक प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद की तरफ से अंबाती संजीवा रेड्डी व चरखा सीड्स कुरनूल की ओर से गणेश कुमार रेड्डी ने हस्ताक्षर किए हैं। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. पवन कुमार, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार, बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अध्यक्ष डॉ. वीरेंद्र मोर, आईपीआर सेल के प्रभारी डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. राजेश आर्य व डॉ. जितेंद्र भाटिया मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	3.10.25	3	1-4

ढैंचा की डीएच-1 किस्म के लिए नामी कंपनियों से किया एमओयू

जागरण संवाददाता • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित किए गए उन्नत किस्मों के बीज देश भर में अपना परचम लहरा रहे हैं। विश्वविद्यालय के उन्नत बीजों का देश में प्रचार-प्रसार करने के लिए विभिन्न सरकारी एवं गैर-सरकारी कंपनी के साथ समझौते किए जा रहे हैं। विश्वविद्यालय ने पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप के तहत तकनीकी व्यवसायीकरण को बढ़ावा देने के लिए ढैंचा की डीएच-1 किस्म का महाकालेश्वर एग्री टेक प्राइवेट लिमिटेड हैदराबाद तेलंगाना तथा चरखा सीड्स कुर्नूल (आंध्रप्रदेश) के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

ढैंचा की खेती किसानों के लिए वरदान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि ढैंचा हरी खाद के लिए उगाया जाता है। यह एक दलहनी फसल है, जो मृदा की उर्वरता बढ़ाने में मदद करता है। ढैंचा

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के साथ कंपनी के अधिकारी • जागरण

की खेती मुख्यतः खरीफ के मौसम में की जाती है और इसे हरी खाद के रूप में इस्तेमाल किया जाता है जिससे मिट्टी में नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ती है और उर्वरता में सुधार होता है। ढैंचा मिट्टी की संरचना के सुधार में विशेष भूमिका निभाता है। विश्वविद्यालय द्वारा किए जा रहे शोध कार्यों, उन्नत किस्मों के बीजों तथा नवीनतम तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने के लिए निजी क्षेत्र की कम्पनियों के साथ समझौते किए जा रहे हैं। इससे किसानों एवं ग्रामीण युवाओं को अतिरिक्त रोजगार के अवसर भी मिल रहे हैं। यह समझौता किसानों के लिए नई संभावनाओं के द्वार खोलेगा तथा खेती को लाभकारी व्यवसाय बनाने में सहायक सिद्ध होगा। ढैंचा नाइट्रोजन की आपूर्ति बढ़ाने में सहायक कुलपति ने बताया कि वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को कृषि उपकरणों, जैविक खेती, सिंचाई तकनीक और फसल प्रबंधन हेतु नवीनतम जानकारी दी जा रही है। विश्वविद्यालय किसानों की पैदावार में बढ़ोतरी करने के साथ-साथ उनकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए भी सदैव प्रयासरत रहता है।

न्होंने बताया कि ढैंचा की जड़ों में राइजोबियम जीवाणु होते हैं जो वायुमंडलीय नाइट्रोजन को भूमि में स्थिर रखते हैं जिससे भूमि में नाइट्रोजन की आपूर्ति होती है। ढैंचा जैविक पदार्थों में वृद्धि, भूमि की जल धारण क्षमता में बढ़ोतरी, सूक्ष्म पोषक तत्वों की आपूर्ति तथा खरपतवार नियंत्रण में भी सहायक है। उन्होंने बताया कि ढैंचा भूमि की प्राकृतिक उर्वरता को बढ़ाकर रासायनिक खादों की आवश्यकता को भी कम करता है। इन कंपनियों के साथ हुआ समझौता कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय की ओर से समझौता ज्ञापन पर विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. एसके पाहुजा ने जबकि महाकालेश्वर एग्री टेक प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद की तरफ से अंबाती संजीवा रेड्डी तथा चरखा सीड्स कुरनूल की ओर से गणेश कुमार रेड्डी ने हस्ताक्षर किए हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	01.10.2025	--	--

हकृवि ने ढैंचा डीएच-1 किस्म के लिए कंपनियों से किया समझौता

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप के तहत तकनीकी व्यवसायीकरण को बढ़ावा देने के लिए ढैंचा की डीएच-1 किस्म का महाकालेश्वर एग्री टेक प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद, तेलंगाना तथा चरखा सीड्स कुरनूल, आंध्रप्रदेश के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि ढैंचा हरी खाद के लिए उगाया जाता है। यह एक दलहनी फसल है, जो मृदा की उर्वरता बढ़ाने में मदद करता है। ढैंचा की खेती मुख्यत: खरीफ के मौसम में की जाती है और इसे हरी खाद के रूप में इस्तेमाल किया जाता है जिससे मिट्टी में नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ती है और उर्वरता में सुधार होता है। ढैंचा मिट्टी की संरचना के सुधार में विशेष भूमिका निभाता है। विश्वविद्यालय द्वारा किए जा रहे शोध कार्यों, उन्नत किस्मों के बीजों तथा नवीनतम तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने के लिए निजी क्षेत्र की कम्पनियों के साथ समझौते किए जा रहे हैं। इससे किसानों एवं ग्रामीण युवाओं को अतिरिक्त रोजगार के अवसर भी मिल रहे हैं। यह समझौता किसानों के लिए नई संभावनाओं के द्वार खोलेगा तथा खेती को लाभकारी व्यवसाय बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. पवन कुमार, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार, बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अध्यक्ष डॉ. वीरेन्द्र मोर, आईपीआर सेल के प्रभारी डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. राजेश आर्य व डॉ. जितेन्द्र भाटिया उपस्थित रहे।

इन कंपनियों के साथ हुआ समझौता

कुलपति प्रो. काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय की ओर से समझौता ज्ञापन पर विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने जबकि महाकालेश्वर एग्री टेक प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद की तरफ से अंबाती संजीवा रेड्डी तथा चरखा सीड्स कुरनूल की ओर से गणेश कुमार रेड्डी ने हस्ताक्षर किए हैं।

ढैंचा नाइट्रोजन की आपूर्ति बढ़ाने में सहायक

कुलपति ने बताया कि वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को कृषि उपकरणों, जैविक खेती, सिंचाई तकनीक और फसल प्रबंधन हेतु नवीनतम जानकारी दी जा रही है। विश्वविद्यालय किसानों की पैदावार में बढ़ोतरी करने के साथ-साथ उनकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए भी सदैव प्रयासरत रहता है। उन्होंने बताया कि ढैंचा की जड़ों में राइजोबियम जीवाणु होते हैं जो वायुमंडलीय नाइट्रोजन को भूमि में स्थिर रखते हैं जिससे भूमि में नाइट्रोजन की आपूर्ति होती है। ढैंचा जैविक पदार्थों में वृद्धि, भूमि की जल धारण क्षमता में बढ़ोतरी, सूक्ष्म पोषक तत्वों की आपूर्ति तथा खरपतवार नियंत्रण में भी सहायक है। उन्होंने बताया कि ढैंचा भूमि की प्राकृतिक उर्वरता को बढ़ाकर रासायनिक खादों की आवश्यकता को भी कम करता है।